ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 1,Jan 2023

अपभ्रंश शैली में पशु-पक्षियों का रूपांकन

Shivani verma

Department of drawing and painting

University of Rajasthan Jaipur

Email ID: shivaniverma3091998@gmail.com

शोध सार

कला मानव मन की आंतरिक अमूर्त भावनाओं को मूर्त रूप में व्यक्त करने का माध्यम रही है। कला की प्राचीनता ने यह सिद्ध कर दिया की मनुष्य का जीवन कला से कितना प्रभावित रहा है तथा पशु-पक्षियों से मानव का किस तरह का संबंध रहा । वर्तमान में मानव की पशु-पक्षियों से प्रेम भावना अतीत का ही तो परिणाम है। प्रागैतिहासिक काल में कला मनुष्य की वाणीं बनीं। उसके पश्चात सभ्यता का विकास हुआ और चित्र, मूर्ति, वास्तु आदि में भी पशु-पक्षी विभिन्न स्वरूप धारण कर जन-जन को प्रभावित करने लगे। एतिहासिक काल में कला को साहित्य रचनाओ में स्थान मिला और भित्ति चित्रो की समृद्द परंपरा ने चित्रकला को नए आयाम दिये। मध्यकाल तक आते-आते कला वैयक्तिक विशेषताओं का रूप लेने लगी व कला की शैलियां बनने लगी। जिनमें पाल शैली व अपभ्रंश शैली भावी शैलियों का आधार बनी । जिसने आगे की कला के हेतु पथ प्रदर्शक का कार्य किया।

बीज शब्द : प्रागैतिहासिक, आघ एतिहसिक, एतिहासिक, अपभ्रंश शैली, पशु - पक्षी चित्रण, गुफा चित्रण, जैन धार्मिक ग्रन्थ

मूल आलेख

भारतीय चित्रकला में पशु पक्षी चित्रण प्रारंभिक स्वरुप

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 1,Jan 2023

पुरालेखीय स्रोत सामग्री के आधार पर इतिहास को तीन कालां में विभाजित करते है। प्रागैतिहासिक काल से पुरातात्विक स्रोतो का मिलना प्रारम्भ हो जाता है । भारतीय प्रागैतिहासिक चित्रकला की खोज का श्रेय आर्चिवाल्ड कार्लाइल व जॉन कॉकबर्न को दिया जाता है । भारतीय चित्रकला के आरंभ का यह काल, भाषा के अविकसित रूप कि अवस्था जंहाँ मनुष्य अपने भावों व विचारों को शब्दो में व्यक्त नही कर सका तब उसने चित्रकला को माध्यम के रूप में चुना और इस चित्रण में उसने अपने दैनदिन जीवन सम्बन्धी घटनाओं को गुफाओं कि शिलाओं पर उकेरा । भारतीय चित्रकला के संदर्भ में देखते हैं तो पूर्व पाषण काल, मध्य पाषाण काल व उत्तर पाषाण काल में से उत्तरपाषाण युग से जो चित्र देखने को मिले उनकी स्थिति बेहतर दिखाई देती है व इस युग कि चित्रकला के साक्ष्य सम्पूर्ण भारत में द्रष्टव्य है । मुख्य रूप से चित्रकला कि शुरआत उत्तरपाषाण युग से मानते है । परंतु भोपाल क्षेत्रांतर्गत भीमबेटका गुफा का पूर्व पाषाण से सबंध मानते है । प्रागैतिहासिक चित्रकला की दृष्टि से सम्पन्न क्षेत्र कैमूर की पहाड़िया, विंध्याचल पर्वत स्थित मानी जाती है । सर्वप्रथम प्रागैतिहासिक चित्रो की खोज मिर्जापुर से प्रारम्भ हुई । प्रागैतिहासिक कालीन महत्वपूर्ण पशु-पक्षी चित्रण की क्षेत्रान्तर्गत नामावली निम्न प्रकार सुविधाजनक दृष्टि से प्रस्तुत है2 :-मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश)

लिखानिया, विजयगढ़, रोप, घोड़मगर में प्राप्त चित्रण साक्ष्य में हाथी पकड़ने का दृश्य, घोड़े व मगर का दृश्य, सूअर, गैंडा, बारहसिंघा के दृश्य, गैंडे के दृश्य, घोड़े व मगर का दृश्य, हिरण, सांभर, गैंडे के आखेट व कुत्ते का दृश्य तथा भल्डरिया, महड़रिया, मानिकपुर स्थानों से सूअर के आखेट का दृश्य, ऊँट के आखेट का दृश्य, तीन घोड़ो का अंकन

रायगढ क्षेत्र (मध्य प्रदेश)

सिंघनपुर में कंगारू का चित्र, घोडा, बारहसिंघा, साही, भैंसा, सूँड उठाए हाथी, व खरगोश व जंगली सांड के आखेट का दृश्य

पंचमढ़ी क्षेत्र (मध्य प्रदेश)

बाजारकेव -लशकरिया खोह, भांडादेव, इमलीखोह में विशालकाय बकरी का चित्र, बैल के शिकार का दृश्य, शेर के आखेट का दृश्य

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 1,Jan 2023

होशंगाबाद क्षेत्र (मध्य प्रदेश)

महिष, हाथी, घोड़े, सांभर, सुप्रसिद्ध चित्र जिराफ ग्रुप का द्रश्य व विशालकाय मयूर का दृश्य

भोपाल क्षेत्र (मध्य प्रदेश)

धरमपुरी, भीमबेटका में हिरण आखेट का दृश्य, बारहसिंघा, सूअर, रीछ व भैंसे का दृश्य

बांदा क्षेत्र (उत्तर प्रदेश)

सरहत व करियाकुंड स्थान से अश्व(अश्वारोही रूप) के समुहांकन दृश्य, सांभर आखेट, एक हाथी का दृश्य

दक्षिणी भारत

हरनीहरन में गैंडे के आखेट का दृश्य3

प्रस्तुत क्षेत्रांतर्गत हमें पशु-पक्षी चित्रण परंपरा के साक्ष्य उपलब्ध हुए । इस काल में पशु व पक्षी चित्रण आखेट रूप में हुआ है । प्रागैतिहासिक काल के चित्रो का रंग विधान देखे तो गेरुआ, हरा, पीला, काला, सफेद रंगो का प्रयोग किया गया है । खनिज रंगो का यहा प्रयोग हुआ व रंगो को पशु की चर्बी में मिश्रित कर जानवरों की हड्डीयों का प्रयोग रंग मिश्रण हेतु प्याली के रूप में किया । सरल व ज्यामितिक रूपाकारों का यहाँ प्रयोग हुआ है व क्षेपांकन पद्धति से भी चित्र निर्माण हुआ है । प्रागैतिहासिक चित्रकला मे चित्रित पशु-पक्षियों को देखने से प्रतीत होता है की आदिम मानव की उनके प्रति क्या भावनाएँ रही होंगी । जब मनुष्य का सामना अपने से भिन्न प्राणी से हुआ । तब उसके मन में इन प्राणियों के प्रति जो भाव रहे वही उसने शिलाओं पर व्यक्त किये । विद्वानां के अनुसार आदिममानव पशु-पक्षी चित्रण इसलिए करता था ताकि वह आखेट का अभ्यास कर सके व उन पर विजय प्राप्त करने की भावना से करता था।

आघ ऐतिहासिक कालीन सिंधु सभ्यता में प्रचुर मात्रा में कला के साक्ष्य प्राप्त होते हैं। सभ्यता की शुरुवात का यह काल जब मानव सभ्यता के पथ पर कदम रखता है। लेखन का आविष्कार कर भाषा को जन्म देता है। इतिहास के सुनहरे

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 1,Jan 2023

पन्नों पर मानव सभ्यता युग की जानकारी यही से मिलना प्रारम्भ होती है। मृत पात्रों की सभ्यता रही सिंधु सभ्यता के संबंध में भारतीय पुरातत्व विभाग के तत्कालीन डायरेक्टर सर जॉन मार्शल ने 1924 ई. में सिंधु सभ्यता की एक नई सभ्यता रूप में घोषणा की। इससे पूर्व चार्ल्स मेंसन 1826 ई. में इस सभ्यता की जानकारी दी। सिंधु घाटी सभ्यता नगरिय संस्कृति पर आधारित रही है। परंतु यहाँ अन्य कलाओं का भी पूर्ण विकास हुआ। कला की दृष्टि से हड़प्पा, मोहनजोदड़ो व लोथल संपन्न स्थल माने जा सकते हैं। सिंधु सभ्यता में चित्रकला में पशु-पक्षी संबंधित कला सामग्री हमें चित्र व मूर्ति दोनों रूपों में प्राप्त होती है। सिंधु सभ्यता में चित्रित सामग्री मृदभांड पर प्राप्त होती है। मृदभांड चाक व हस्तनिर्मित दोनों रूपों में बने हैं। अधिकतर मृदभांड खंडित रूप में ही प्राप्त हुए हैं। चित्रित बर्तन ऊपरी स्तर की खुदाई से प्राप्त है। लाल रंग के लेप पर काले रंग से चित्रकारी की गई है। इनमें पशु पक्षी उदाहरणों में मछली का चित्र पक्षियों में मोर का चित्र प्राप्त है। सर्प व पक्षी पेड़ पर बैठे अंकित हैं। एक मृदभांड पर पशुओं की पंक्ति चित्रित मिली। वह हड़प्पा से प्राप्त मृदभांडो टुकड़ों पर हिरण गाय व कहीं-कहीं बारहसिंघा मयूर के पेट पर व्रत व गाय के पीछे कुत्ता चित्रित मिलता। यथार्थवादी रूप में बारहसिंघा की आकृति भी है। बकरे व वृषभ को भी चित्रित किया गया है। सुरकोटड़ा के प्रथम काल के चरण में सारस, हिरण, बतख सौंदर्य पूर्ण चित्रित हुए हैं। सिंधु सभ्यता के द्वितीय चरण में जानवर पारंपरिक को बनने लगे तथा अलंकरण में सरलता आयी। यहां पशु-पक्षी मात्र प्राणी ना होकर उन्हें विशिष्ट स्थान प्राप्त हुआ। बैल को शक्ति का प्रतीक माना जाने लगा और इसे महत्व दिया गया। सिंधु सभ्यता के समस्त कला संबंधी अवशेष हमें पशु-पक्षी चित्र संबंधी महत्व का दर्शन कराते हैं।1

चित्रकला में ऐतिहासिक साक्ष्य के प्रमाण शास्त्रीय युग 300 ई.-800 ई. से मिलना प्रारंभ होते हैं। चित्रकला संबंधित स्वर्णिम काल का यह दौर है। यह कला से संबंधित ग्रंथों का रचनाकाल रहा है। जिनमें ललित विस्तार, कामसूत्र, मानसार, पुराणों में विष्णुधर्मोत्तर पुराण का चित्रसूत्र, चित्रलक्षण, पाणिनि का अष्टाध्यायी जिसमें कला के लिए चारु व कारू जैसे शब्दों का प्रयोग हुआ। इस अवधि के समस्त ग्रंथ कला में सौंदर्यता का बखान करते प्रतीत होते हैं। शास्त्रीय युग में चित्रकला के दर्शन हमें भित्ति चित्रों के रूप में प्राप्त होते हैं। इनमें जोगीमारा,

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved. UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 1,Jan 2023

एलोरा, एलिफेंटा, उदयगिरि, खंडगिरि, सिगिरिया गुफाएं हैं जो वास्तु व मूर्तिकला से संबंध रखती हैं व भित्ति चित्रण की शुरुआत जोगीमारा गुफा भित्ति चित्र परंपरा से मानते है। उसके बाद अन्य गुफाओं में चित्रण प्रारंभ हुआ।

जोगीमारा गुफा मध्यप्रदेश वर्तमान में छत्तीसगढ़ राज्य में सरगुजा जिले में रामगढ़ पहाड़ी पर स्थित है। यहाँ जोगीमारा सीता बेंगड़ा, लक्ष्मण बेंगड़ा व अन्य छोटी गुफाए प्राप्त होती है। इन गुफाओं को एशिया की प्राचीनतम नाट्यशाला का दर्जा प्राप्त है। वरुण देवता के मंदिर नाम से यह गुफा प्रसिद्ध रही है। परंतु चित्रण सामाग्री मात्र जोगीमारा गुफा में ही मिलती है। इतिहासकारों व विद्वानों ने जोगीमारा गुफा के भित्तिचित्रों का समय 300 ई. पूर्व लगभग निर्धारित किया है।1 जोगीमारा गुफा के चित्र सबसे प्राचीन भित्ति चित्रण साक्ष्य उपलब्द कराते है। इस गुफा में मानव व जीव-जगत संबंधी चित्रण हुआ है। मानव आकृतियां कहीं पेड़ के नीचे बैठी अंकित है तो एक स्थान पर फूल पर एक युगल नृत्य मुद्रा में चित्रित है। जोगीमारा में पशु-पक्षी चित्र मानव आकृतियों के साथ किया गया है। असित कुमार हालदार के अनुसार गुफा के दाहिनी और प्रथम भाग में निर्मित चित्र में एक हाथी की आकृति, समुद्री शार्क मछली व यहां दूसरे भाग के चौथे चौखट के दृश्य में एक मनुष्य को चौंच युक्त बनाया गया है। जिसे हम पक्षी श्रेणी में रख सकते हैं। दूसरे भाग में काले रंग से एक बाग चित्रित मिलता है। स्मिथ महोदयानुसार जोगीमारा के चित्रों में पशु-पक्षी दृश्यों में घोड़ों का अंकन, एक वृक्ष पर चिड़िया, हाथी, तीन घोड़ों का रथ आदि है। यहाँ चित्र में लाल, काल व पीले रंगों का प्रयोग हुआ है। चित्रों को ज्यादा कुशलतापूर्वक नहीं बनाया गया है। यहाँ चित्रित आकृतियां सांची में भरहुत की तक्षण कला से साम्य रखते प्रतीत होती हैं व पृष्ठभूमि पर चित्रों का निर्माण लाल, काले रंग से किया गया है। घोड़े व पक्षी लाल रंग से बने हैं।

सैकड़ों वर्षो तक अज्ञात बनी रही अजंता की कलाकला इतिहास की अनुपम धारा है। अजंता की गुफाएं महाराष्ट्र राज्य के औरंगाबाद में स्थित है। यह गुफा भारतीय चित्रकला के इतिहास में किसी विस्मय से कम नहीं है, जो आज्ञात वर्षो से जीव-जगत का रेन बसेरा रही। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भी अजंता के बारे में अपने यात्रा स्मरण में सुंदर विवेचन किया है। यहां कुल गुफा 30 दृष्टव्य है। इनके निर्माण का समय ई. पूर्व दूसरी सदी से सातवीं सदी तक आते-आते समाप्त

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 1,Jan 2023

हो जाता है। यहा दो प्रकार के गुफा निर्मित हुई है। एक चौत्य व दूसरी विहार। जिसमें चैत्य को बौद्ध धर्म के देवालय की संज्ञा प्राप्त है। यह बौद्ध भिक्षओं का पूजा स्थल मानी जाती थी। इन चैत्य गुफाओं मे 9, 10, 19, 26 आती है तथा अन्य समस्त गुफाएँ विहार मानी गयी है। इन चार चैत्य गुफाओं में दो हीनयान व दो महायान की शाखा से संबंध रखती। विषय वस्तु बुद्ध की जातक कथाओं से संबंधित है तथा कुछ पौराणिक वेदांत कथाओं के चित्र भी दर्शनीय हैं। जातक कथाओं में हस्ती जातक, शिवि जातक, महाहंस जातक, विधुर पंडित जातक, साम जातक व मार विजय, वेसंतर जातक, बोधिसत्व पद्मपाणि, चंपेय जातक, छदंत जातक व महकपि जातक इत्यादि है। यहाँ पशु-पक्षी असंख्य चित्रित हुए हैं। इनमें घोड़े बंदर, हाथी, हिरण, सांप आदि अत्यंत ही अलंकृत सौंदर्य पूर्ण अंकित है। अजंता में पशु-पक्षी चित्रण के विधान की बात की जाए तो यहाँ इसका बहुत ही शानदार पूर्ण अंकन हुआ है। विभिन्न जातक कथाओं में पशु-पक्षी चित्रण को स्थान मिला है। जैसे महाजनक जातक, मार विजय, बोधिसत्व पद्मपाणि, छदंत जातक इत्यादि। हंस जातक में कमल सरोवर में हंसों का चित्रण आकर्षक है। न्यग्रोधजातक कथा में मानव चित्र के निचले भाग में व घोड़ों का चित्रण भी चित्रित है। चंपेय जातक मे चींटिया अंकित है। जिसके संबंध में कथा है की भगवान बुद्ध मोक्ष पाने की इच्छा से अपने शरीर को नष्ट करने हेतु चींटियों के बिल पर लेट जाते हैं ताकि चींटिया उनके शरीर का भक्षण कर लें और उन्हे मुक्ति मिल जाये। अजंता के चित्र विषय में विविधता है व चित्रों में लौकिकता, परलौकिकता व धार्मिकता विद्यमान हैं। पशु-पक्षी चित्रण अलंकारिक रूप में प्रचुर मात्रा में हुआ है। पशु-पक्षी चित्र में मुद्राएं स्पष्ट भावना पूर्ण है। यहाँ भित्ति चित्रण विधि में तैयार भित्ति पर हल्के गेरू रंग से रेखांकन किया जाता था। खनिज रंगों का प्रयोग हुआ है। जिनमें लाल, पीले, नीले, सफेद, काले, स्थानीय हरे रंग का प्रयोग दिखाई देता है तथा द्वितीय व बहुरंगीय वर्ण योजना भी यहाँ अंकित है। भाव-भंगिमाओं को प्रदर्शित करती रेखाएँ भारतीय चित्रण परंपरा की अमूल्य धरोहर है। अजन्ता की अलंकरण योजना व प्रतिकात्मकता इसकी विशेषता रही है।2

बाघ गुफा की कलाकृतियां भी इसी युग में अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं। वर्तमान में बाघ गुफा मध्य प्रदेश के अंतर्गत धार जिले में इंदोर से 140

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 1,Jan 2023

किलोमीटर दूर (बाघिनि) बाघ नदी तट पर स्तिथ है। बाघ गुफाओं में 8 गुहा मंदिर मिलते है जिनके नाम भी प्रचलित है। इन गुफाओं में गुहा मंदिर सं 4 में 6 दृश्य देखने को मिलते है। बाघ गुफा सं 2 गुसाई या 'पंच पांडव' नामक गुफा में सिंह व हाथी की आकृतियां मिलती है। गुफा सं 3 'हाथीखाना' में सिंह व गुफा सं चार में मगर की आकृति नाग नागराज के रूप में अंकित हैं। इसी गुफा संख्या में दृश्य एक में एक चिड़िया को अपने बच्चों को दाना खिलाते हुए चित्रित किया गया है। इसी क्रम में यहाँ दृश्य संख्या 5 में जुलूस का चित्रण है जिसमें घोड़ों का अंकन हुआ है। दृश्य संख्या 6 में हाथियों के जुलूस का चित्रण है तथा अन्य चित्रों में 4 हाथी और 3 घोड़ो को भी चित्रित किया गया है। बाघ की चित्रकारी अजंता की परिपाटी के समान है। यहां पशु-पक्षी चित्रण मानव आकृति के साथ हुआ है स्वतंत्र रूप में नहीं। बाद के पशु-पक्षी चित्रण में रेखांकन दक्षता पूर्ण दिखाई पड़ता है। पक्षियों में यहां शुक, सारिका, कलहंस, मयूर, सारस, कुक्कुट, कोयल आदि का चित्रांकन हुआ है। संयोजन विधान भी कुशलतापूर्वक है व रंग विधान साधारण है। परंतु फिर भी चित्रण में सौंदर्यता है। पशु-पक्षियों के साथ ही यहां जीवन के विभिन्न पक्षों पर भी चित्रण हुआ है।3

गुफाओं के इन क्रम में सित्तनवसाल में भी हमें कुछ जानवरों के चित्र प्राप्त हुए है। सित्तनवासल गुफाएं तंजौर के समीप स्थित है। यहां चित्रण विधान भी अजंता शैली से साम्य रखता है। पशु-पक्षी चित्रण यहां गुफा की छत पर अंकित कमल सरोवर चित्रण में मीन, मकर, कच्छप हाथी, महिष, हंस को दर्शाया गया है। यहां चित्र जैन धर्म से संबंधित मिलते है। यहाँ पशु-पक्षी सबंधी चित्र प्रायः कम प्राप्त होते है। चित्र अधिकांशत मानवीय पक्ष पर आधारित अंकित है।4

एलोरा में भी पशु-पक्षी संबंधी कलाकृति के साक्ष्य हमारे समक्ष है। महाराष्ट्र में स्तिथ एलोरा में निर्मित गुफाएँ हिन्दू, बौद्ध व जैन तीनों धर्मो के संगम का उदाहरण है। एलोरा गुफा मंदिर क्रम संख्या 6 में सिंह व मयूर की आकृतियां देखने को मिलती है। चित्रकला की दृष्टि से एलोरा में कैलाश मंदिर के मुख्य मंडप के स्तंभों पर सुंदर आलेखनो का चित्रण हुआ है। जिनमें हमें हाथी, मछली, गरुड़ पर बैठी वैष्णवीं होती है। एलोरा की गुफा क्रम संख्या 31 इंद्र सभा से संबोधित इस गुफा में प्रवेश द्वार के दाहिने ओर हाथी की विशाल मूर्ति है।5

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 1,Jan 2023

पाल शैली में चित्रण सचित्र पथियों के रूप में हुआ। यह सचित्र पोथिंया ताल पत्रों पर लिखी गई है। इन पथियों की प्रतियां नेपाल, बंगाल, बिहार के अंतर्गत नालंदा, विक्रमशिला, भागलपुर से प्राप्त हुई है। इन ताल पत्री पोथियों के पृष्ठ लगभग सवा 22 इंच लंबे और सवा 2 इंच चौड़े हैं तथा यह पोथियां देवनागरी लिपि में सुंदर अक्षरों में लिखी गई है। यहां कुछ पोथियों में काली पृष्ठभूमि पर सफेद रंग से लिखाई हुई है। बौद्ध धर्म से संबंधित महायान शाखा से संबंधित चित्रों का वर्णन पाल शैली में देखने को मिलता है। इनमें प्रज्ञापरमिता, साधनामाला, पंचशिखा, करणदेव गुहा आदि सचित्र पोथिंया में पशु-पक्षी चित्रित हुए है। नेपाल, बंगाल, बिहार इस शैली के केंद्र रहे हैं। पोथियों के रंग में लाल, नीला, सफेद, काला तथा मूल रंग के मिश्रण से बनाए गए गुलाबी, बैंगनी तथा फाखतायी आदि रंगों का प्रयोग हुआ है। अजंता की परंपरा रही है। परंतु फिर भी यहां चित्रों की लिखाई निर्बल है।1

अपभ्रंश शैली में पशु - पक्षी रूपांकन

अपभ्रंश शैली जिसके कई नाम प्रचलित रहे, 'गुजरात शैली', 'सूलिपि शैली', 'पश्चिम भारतीय शैली', पुस्तक शैली, जैन शैली इत्यादि। भारत में मध्यकाल में कला विशेष रूप से प्रभावित रही है। आठवीं-नौवीं शताब्दी से हमारे देश पर मुसलमानों के लगातार प्रहार होते रहे। नए-नए राज्य बनते गए प्रमुख शक्तियां राजनीतिक समस्याओं में उलझी रही। ऐसी अवस्था में किसी प्रभावशाली कला शैली को जन्म देना असंभव था। एक ओर राजनीतिक अस्थिरता थी तो दूसरी और धर्म फिर से अपने पुरजोर पर था। अन्य धर्मों का प्रचार-प्रसार भी हो रहा था। इस समय तक आते-आते भित्ति चित्रण भी लगभग शिथिल होने लगा था। इस कारण कला व धर्म को सुरक्षित रखने हेतु चित्र पोथियों के रूप में बनना प्रारंभ हुए। पूर्व मध्य काल में हमे चित्र कला के दर्शन होते हैं अपभ्रंश शैली के रूप में। इस शैली की खोज 20वीं शताब्दीं में प्रारंभ हुई। 1913 ई. में जैन ग्रंथ की एक प्रतिलिपि बर्लिन में मिली व इसके बाद इस पर लेख प्रकाशित हुए। 1942 ई. में डॉ. आनंद कुमार स्वामी ने अपना एक लेख प्रकाशित किया। 1924 ई. में एन. सी. मेहता ने 'गुजरात शैली' के नाम से अपनी पत्रिका 'रूपम' में इसके बारे में लेख प्रकाशित किया व इसके बाद अजीत घोष ने इस शैली के संबंध में अपने मत प्रस्तुत

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 1,Jan 2023

किए। 1929 ई. में मिस्टर ब्राउन के लेख प्रकाशित हुए और इस तरह लोगों का ध्यान इस शैली की ओर आकर्षित हुआ और इसकी खोज प्रारंभ हुई। इस शैली के संबंध में अनेकों नाम प्रचलित है। परंतु जो सबसे अधिक उपयुक्त नाम है वह है अपभ्रंश। डॉ. मोती चंद्र व रायकृष्णदास द्वारा इस शैली की विशेषताओं को देखते हुए इसे 'अपभ्रंश शैली' नाम दिया गया। इस शैली में प्रारम्भिक चित्र जैन धर्म से संबन्धित बने। परंतु बाद में वैष्णव धर्म पर आधारित चित्र भी बनने लगे। जैन शैली के नामकरण को लेकर भी अनेक विद्वानों द्वारा अनेक मत प्रचलित है। जिसमें अनुमान लगाया जाता है कि यह चित्र जैन साधुओं द्वारा बनाए गए होंगे। 11वीं शताब्दीं के मध्य पश्चिम भारत में एक सचित्र पोथी प्रकाशित हुई। अपितु यह जैनेत्तर थी। परंतु इन ग्रंथों का मुख्य विषय जैन धर्म से संबंधित था। इस कारण इसे जैन शैली नाम दिया गया था। श्री गांगुली को 1929 ई. में बालगोपाल स्तुति की वैष्णव धर्म से संबंधित चित्रों का पता चला व वसंत विलास जैसी पोथियों के चित्र भी जैन धर्म से संबंधित नहीं थे। इन पोथियों में जैन धर्म के अतिरिक्त वैष्णव धर्म का भी समावेश था। इस प्रकार इसका 'जैन शैली' नाम भी स्वीकार नहीं किया गया। जब गुजरात के अहमदाबाद में बसंत विलास नामक चित्र प्रति मिली। तब एन. सी. मेहता द्वारा इसे 'गुजरात शैली' नाम से संबोधित किया गया। क्योंकि यह प्रति जैन धर्म से संबंधित नहीं थीं। इसके कुछ समय बाद ही कुछ ऐसे ग्रंथ प्राप्त हुए जो ब्राह्मण धर्म से संबंधित थे और गुजरात से बाहर के थे। इस आधार पर डॉ. आनंद कुमार स्वामी ने इस शैली हेतु 'पश्चिमी भारतीय शैली' नाम दिया। लेकिन इस शैली से संबंधित अन्य चित्र प्रति मालवा, जौनपुर, बंगाल, उड़ीसा, पश्चिम भारत में भी प्राप्त हुई। इस कारण इसके 'पश्चिम भारतीय शैली' नामकरण पर भी संदेह प्रकट किया गया।2 अतः इन सब कारणों को देखते हुए कुछ विद्वान जिनमें मोती चंद्र व रायकृष्णदास ने इस शैली का 'अपभ्रंश शैली' नामकरण किया। क्योंकि इस शैली की प्रगति शिथिल पड़ चुकी थी और यह अपने विकृत रूप को प्राप्त होती जा रही थी। इस कारण इसकी विशेषताओं को देखते हुए इसका 'अपभ्रंश' नाम स्वीकार किया गया।

अपभ्रंश शैली में जो भी चित्र निर्मित हुए वो भित्ति तथा ग्रंथो में मिले। परंतु अपभ्रंश शैली के चित्रो के साक्ष्य सचित्रित पांडुलिपयों में ही उपलब्ध होते है। इन पांडुलिपयों की रचना से धर्म को सुरक्षित रखने का प्रयास किया गया। अपभ्रंश

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 1,Jan 2023

शैली में तीन प्रकार से चित्र पांडुलिपयों में चित्रित हुए थे। ताड़पत्र पोथी चित्र, कागज पर निर्मित चित्र और कपड़े पर निर्मित पट चित्र आदि। इसके अतिरिक्त पटलियों के काष्ठ निर्मित आवरण पर भी चित्रकला के उदाहरण देखने को मिलते है।

ताड़पत्रों पर निर्मित चित्र पोथीग्रंथों में अंगसूत्र, दशवैकालिकलघुवृद्धि, उत्तराध्यानसूत्र, त्रिपिष्ठशलाकापुरुषचरित, नेमिनाथचरित, कथासरित्सागर, संग्रहनीयसूत्र, श्रावकप्रतिक्रमणचूर्णी, कल्पसूत्र इत्यादि है। यह पोथिंया आज भारत के विभिन्न भागों में सुरक्षित है। जिनमें पाटन, बड़ौदा, खंभात, अहमदाबाद, जैसलमेर के निजी पुस्तकालय अथवा भारत के बाहर अमेरिका के बोस्टन स्थित संग्रहालय में सुरक्षित है। जैन धर्म में ताड़पत्र पर पहले भी ग्रंथ लिखे गए अर्थात 11वीं शताब्दीं से पूर्व, पर इनकी प्रतियां उपलब्ध नहीं होती है।2

श्वेतांबर श्वेतांबर सम्प्रदाय की पांडुलिपियाँ

ताड़पत्र पर अंकित प्राचीनतम जैन पांडुलिपियों में ओघनिर्यूक्तिवृति व दशवैकालिक दो ग्रंथ प्राप्त होते है। विद्वानों के अनुसार इन दोनों पांडुलिपियों के एक दाता और एक पात्र एक ही लिपिकार थे। ओघनिर्यूक्ति ग्रंथ के अंतिम चित्रों में श्री का एक चित्र कामदेव द्वारा बाण छोड़े जाने का सजीव चित्रण एवं हाथियों के कुछ चित्र बहुत कौशलपूर्ण चित्रित है। यहां पर रेखांकन भी कुशल हुआ है। क्योंकि 11वीं शताब्दीं से पहले भी कपड़े पर चित्रांकन परंपरा विद्यमान थीं। इसलिए बड़े पृष्ठ पर चित्र बनाने वाले कलाकारों को छोटे आकार में ताड़पत्र पर चित्र बनाने में प्रारंभ में असुविधा हुई होगी। ओघनिर्यूक्ति पांडुलिपि की तिथि विक्रम संवत. 1117 (1060 ई.) अंकित है। यह जैन साधुओं के लिए आचार संहिता के समान है। यह प्रति इस समय जैसलमेर में उपलब्ध है। यह ताड़पत्र पर चित्रित पांडुलिपियां श्वेतांबर शाखा जैनधर्म से संबंधित है। इस प्रति में देवी सरस्वती के नीचे हंस को चित्रित किया है। ताड़पत्र पर निर्मित एक और प्रति खंभात स्थित शांतिनाथ मंदिर के भंडार में ज्ञानसूत्र की पांडुलिपि है। यह 1127 ई. आरंभिक प्रति है, इसलिए उल्लेखनीय है। इसमें अग्रभूमि में एक पक्षी चित्रित है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 1,Jan 2023

कागज पर निर्मित पांडुलिपि पुस्तक के रूप में प्राप्त हुई है। जयसिंहनदी ने भी अपने ग्रंथ वरांगचरित में मंदिर के भीतर पट्टकों के प्रदर्शित किए जाने का जिक्र किया है। जिनसेन प्रथम ने भी अपने ग्रंथ आदि पुराण में जैन पाठशाला का उल्लेख किया है। इनके पट्टकों को भावी जैनधर्म से संबंधित कपड़े के पट्टकों का उद्घोषक मान सकते हैं। गुजरात में जैन पांडुलिपि के लेखन हेतु कागज का प्रयोग 1200 ई. से प्रारंभ हुआ। परंतु प्राप्त प्रमाणों के आधार पर 4थीं शताब्दीं से पूर्व कागज पर चित्रित परंपरा प्रचलन में नहीं थीं। इनमें मुख्य है बसंत विलास, बालगोपालस्तुति गीत, दुर्गासप्तशती, सुपासनाहचिरियम, ज्ञानारणम व लोरचनदा की प्रति, कल्पसूत्र आदि पांडुलिपिया हैं।3 कल्पसूत्र की दूसरी प्रति लिमडी के सेठ आनंद जी कल्याण जी के पास सुरक्षित है। कल्पसूत्र की एक और प्रति है जौनपुर से प्राप्त जो स्वर्ण अक्षरों में लिपिबद्ध है वह वर्तमान में बड़ौदा के नरसिंह जी पोल वाले ज्ञान मंदिर में सुरक्षित है। इस प्रति में हाथियों का चित्रण सफेद रंग से है।5 आकृतियां अकुशल है और हाथी की आकृति में सफेद रंग, बाघ को पीले रंग पर काले धब्बे से बनाया गया है। कल्पसूत्र की अन्य 15वीं शताब्दीं की गुजरात प्रतिलिपि हरीगिनमेशी एक कथा का वर्णन है व इसमें एक आकृति में मनुष्य का मुख हिरण का बना है व ऊपर हाशियों के अलंकरण में हंस चित्रित है। चित्रित आकृतियां भूरे रंग से चित्रित है। कल्पसूत्र की 1490 ई. की स्वर्ण युक्त प्रतिलिपि में ऊपर हाशियों में दो मोर नीले रंग अलंकरण युक्त चित्रित हुए हैं। 16वीं शताब्दीं की कल्पसूत्र की कालकाचार्य कथा पर आधारित प्रति में हिरण भूरे व उस पर नीले रंग से साधारण मोटी रेखायें चित्रित है। गुजरात की ही 15वीं शताब्दीं की अन्य वर्णों के साथ स्वर्ण में निर्मित चित्रलिपि में चार हिरणों का अंकन है। यहां चित्र नीली पृष्ठभूमि पर अंकित किया है। अन्य उल्लेखनीय पांडुलिपियों में कल्पसूत्र में कालकाचार्य कथा से संबंधित पांडुलिपियां है। अहमदाबाद स्थित उज्जैन के धर्मशाला के भंडार में हैं। इसमें 6 चित्र प्राप्त हुए हैं। कालकाचर्या पाण्डुलिपियों के चित्र श्वेतांबर शाखा अंतर्गत जैन चित्रकला के अच्छे उदाहरण कहे जा सकते है। उत्तराध्यानसूत्र इसमें मयूर व मछली की आकृतियां अंकित है। इनमें भी सबसे पुरानी ज्ञात चित्रित प्रति कल्पसूत्र की ही है जो रॉयल एशियाटिक सोसायटी मुंबई के पुस्तकालय में सुरक्षित है व इसी की एक ओर प्रति है श्वेतांबर शाखा की 15वीं शताब्दीं की जिसमें मयूर पंख फेलायें अपने स्वाभाविक रंग में और पानी में दो मछलियां बनाई गयी है।4 1100 ई. की

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 1,Jan 2023

निशिथचूर्णी नामक सचित्र प्रति अलंकरण युक्त है। इसमें एक व्रत में हाथी पर सवार एक व्यक्ति व दो स्त्रियां है। इसके पश्चात रुड़ीबद्ध तरीके से सचित्र पांडुलिपियां लिपिबद्ध होती रही। 13वीं शताब्दीं के अंत होते-होते पशु चित्रण भी प्राप्त होने लगते हैं। 14वीं शताब्दीं तक चित्र कागज पर ही बनने लगे। मांडू व जौनपुर इस समय उन्नत केन्द्र थें।

इसके अतिरिक्त काष्ठ निर्मित आवरणों में भी पशु-पक्षी चित्रित हुए जिनमें से जैसलमेर के जैन भंडार में सुरक्षित एक पटली में जिराफ व गैंडे का चित्रण लहरदार वृताकर रेखाओ में व पक्षी, दैत्याकार जलचर है। इसमें हिरण, सूअर के चित्र भी दर्शनीय है। दूसरी पटली इसी भंडार की है, पूँछ ऊपर उठाए हाथी, पक्षी खूंकार शेरां का चित्रण है। यें सभी पशू-पक्षी वृतकार घेरों के मध्य चित्रित हुए है। इन पटलियों पर अन्य पशु-पक्षियों में एकाकी या युगल बतख, पौरणिक जलचर तथा एक और इसी भण्डार की पटली जिस पर हाथी, चीता, बंदर, मछली व कछुआ लहरदार लता के घुमाव में चित्रित है।6

इस शैली के कपड़े पर निर्मित चित्र या पटचित्र यह लंबी पट्टीनुमा जैसे होते थे। इनमें सर्वप्रथम पाटन के भंडार का पंचतीर्थी पट है। इसके चित्रों का प्रकाशन 1932 ई. में हुआ। अहमदाबाद की 1451 ई. के वसंत विलास का चित्रित पट में उपलब्ध है। यह चित्र की प्रति कालिदास के काव्य ऋतुसंहार पर आधारित है। इस कुंडलीनुमा लिपिबद्ध प्रति में बसंत के आगमन व प्रेम प्रसंग का वर्णन है। परंतु यहां चित्रित पशु-पक्षियों में सजीवता दिखाई देती है। अपभ्रंश शैली की अन्य चित्रित पांडुलिपयां में भी पशु-पक्षी चित्रण हुआ यथा श्वेतांबर शाखा की प्रति जिसमें महावीर स्वामी को परीक्षण करने की कथा है व इसमें साँप, बिच्छू, हिरण, को चित्रित किया गया है। नवग्रह पर आधारित इस हस्तलिपि में नो आकाशीय तत्वां को चित्रित किया गया है व इसमें हमें हिरण, हाथी, गाय, घोड़ा आदि सफेद, काले, हरे रंग मे चित्रित मिलते है। 15वीं शताब्दीं की श्वेतांबर हस्तलिपि में महावीर की आकृति के साथ पक्षियों में दो तोते भूरे रंग से लाल पृष्ठभूमि पर बनाए गए है। प्रथम तीर्थंकर ऋषभनाथ की जीवन की दो घटनाओं से संबन्धित इस प्रति में ऋषभनाथ के जन्म व विवाह का एक साथ अंकन है। जिसमें दो मोरों की आकृति देखने को मिलती है। आकृतियां बहुत ही साधारण सी बनी है। एक और हस्तलिपि जिसमें पाशर्वनाथ द्वारा साँप को मुक्त करने की घटना का

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 1,Jan 2023

उल्लेख है व इसमें हाथी की आकृति अलंकरण युक्त निर्मित मिलती है। ब्रिटिश लाइब्रेरी की इस हस्तलिपि में मछली के साथ ही पक्षी मनुष्य को खाते हुए चित्रित हुए है, जो कर्म के फल व पाप-प्राश्चित आदि की घटना से संबंध है। पशुओं की आकृतियां सफेद रंग से चित्रित की गयी है एलोरा में भी पशु-पक्षी संबंधी कलाकृति के साक्ष्य हमारे समक्ष है। इस पाण्डुलिपि में नेमिनाथ की त्याग की कथा का वर्णन है। इसमें हिरण व घोड़े को चित्रित किया गया है। भूरे रंग में चित्रित पशुओं की आकृति में हिरणों की अधिकता है व यहां एक घोड़े को गुलाबी रंग तथा इसको गहरे गुलाबी रंग की बुँदियो से अलंकृत किया गया है।

दिगम्बर श्वेतांबर सम्प्रदाय की पांडुलिपियाँ

दिगम्बर पाण्डुलिपियों का रचना विद्वानोनुसार 12वीं शताब्दी से प्रारम्भ होती है। इन पांडुलिप्योन की सं. श्वेताम्बर पाण्डुलिपियों की तुलना में अल्प रही है। अम्लानन्द घोष के अनुसार दिगम्बर शाखा की सामान्यत प्राचीनतम पाण्डुलिपि षट् खंडागम, महा-बंध व कषाय पाहुड़ मानी जाती है। वर्तमान में ये पाण्डुलिपियां मुडबिद्री जैन सिद्धांत बसदी कर्नाटक के संग्रह में है। इन सचित्र लिपियों की सं. प्राय कम है। इन पाण्डुलिपियों में हमे पक्षियों में हँस चित्रित मिल जाता है। यहाँ संयोजन में चित्र की बाहरी सीमा रेखा काले रंग में व पृष्ठ भूमि में श्वेत पीला नीला रंग दर्शित होता है।

कागज पर चित्रित इस शाखा की प्रारम्भिक प्रति आदि पुराण की है जो सन 1404 में चित्रित हुई इस लिपि में 257 पृष्ठ है। परंतु इसका पहला पृष्ठ ही चित्रित मिलता है। आदि पुराण की पाण्डुलिपियों को तीन वर्गों में विभाजित मानते है। जिसमें प्रथम वर्गान्तर्गत वृक्षों के मध्य पक्षियों और बंदरों को बैठे चित्रित किया गया है। दूसरी पाण्डुलिपि महा पुराण की है जिसमें चित्रों की विविधता देखी जा सकती है। वर्तमान में ये दिगम्बर जैन मंदिर दिल्ली में संरक्षित है। कागज पर चित्रित इस शाखा की पाण्डुलिपि यशोधर चरित है। जिसे जसहर चरीठ नाम से भी जाना जाता है। यह पाण्डुलिपि लाल, पीले, सुनहरे स्याही से कागज पर रूपायित हुई है। इस पाण्डुलिपि के समस्त चित्रों में हंसो के जोड़े चित्रित मिलते है व गिलहरी तथा अन्य पशुओं के समुहांकन दृश्य मिल जाते है।7

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 1,Jan 2023

अपभ्रंश शैली में पशु-पक्षी चित्रण प्राय लाल व नीली पृष्ठभूमि पर किया गया है। आकृतियों की सीमा रेखाएं काले रंग से बनाई गई है। पशु-पक्षियों की आकृतियों में लाल, भूरे, नीले, सफेद, पीले रंगों का प्रयोग दृष्टव्य है। आकृतियां प्राकृतिक रूप में न बने होने से प्रभाविता नहीं है। पशु-पक्षियों के आकृतियां एक चश्म बनाई गई है। पशु-पक्षियों की आंख मानव आकृतियों के समान ही वक्रो मध्य एक बिंदी लगाकर निर्मित है। पशु-पक्षी खिलौंना जैसे प्रतीत होते है। अपितु यह आकृतियां अपना परिचय देने में सक्षम है। आकृति में संयोजन सरल है। वह हाशियों के अलंकार में भी पशु-पक्षी चित्रण को स्थान मिला है व किन्ही स्थानों पर पशु-पक्षियों में साधारण अलंकरण भी किया गया है। इस शैली में पशु-पक्षियां में हिरण, हाथी, मछली, बिच्छू, बतख, गाय, बाघ, तोता, हंस इत्यादि देखने को मिलते है। यहां पशु-पक्षी चित्रण मात्र अलंकरण हेतु नही हुआ। अपितु इन सब के साथ विभिन्न कथायें जुड़ी हुई है। जिसका जैन धर्मो में महत्व रहा है। जैन धर्म अहिंसावादी सिद्धांतों पर आधारित रहा है। अहिंसा परमों धर्मः का पालन करने वाले लोगो की जानवरों के प्रति भी यहीं भावनाएँ रही। उन्हे स्वयं के सम्मुख स्थान देकर उनकी महत्ता कायम की।

निष्कर्ष

मनुष्य सामाजिक प्राणी है और प्रकृति में मनुष्य से भिन्न प्राणी मात्र जानवर है। जो मनुष्य के साथ-साथ विकास की अविरल धारा में प्रवाहित होता आया है। जिससे हम सभी भली भांति परिचित है और कला जो अन्तर्मन की गहराइयों का बखान है जिसमें उसकी भावनाएँ है जो इन विभिन्न पशु-पक्षियों से संबद्ध रही है। कला मे जब पशु-पक्षी चित्रण के संदर्भ में अध्ययन किया तब पाया की किस तरह से मानव की इन पशु-पक्षियों के प्रति भावनाएँ बदलती गयी। प्रारंभ में जानवरों से मानव का अमुक सबंध रहा वो उन्हे मात्र आखेट की वस्तु समझता था। समय के साथ सभ्यता विकसित होने लगी मानव सामाजिक होने लगा। पशुओं के प्रति शिकार की भावना थोड़ी कम हुई। कला के इतिहास में शास्त्रीय युग में विभिन्न देवी-देवताओं की कल्पना की जाने लगी और इनसे पशु-पक्षियों को संबद्ध किया जाने लगा। फिर मध्यकाल में ग्रंथ चित्रो की परंपरा का प्रचलन रहा। जिसमें साहित्य व कला को सुरक्षित रखने का प्रयास निहित था। इस काल

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 1,Jan 2023

में अपभ्रंश शैली विस्तृत क्षेत्र में कार्य कर रही थीं। इस शैली को विकृत स्वरूप वाली कहा जाता है। क्योंकि चित्रकला के जो गुण विशेषताएं अजंता से चली आ रही थीं। उसका इस समय ह्रास हो रहा था। अपभ्रंश शैली के चित्रों का अध्ययन करने पर प्राप्त होता है की भले ही पशु-पक्षी अकृतियों में अस्वभाविकता व विकृतता है फिर भी ये चित्र भावनाओं के स्पष्टीकरण में सफल है। वर्तमान में भी पशु-पक्षियों के प्रति प्रेम यथावत बना हुआ है और कला कार्य में किसी न किसी रूप में इनकी अभिव्यक्ति आज भी हो रही है।